पंचम अध्याय

उपसंहार

पंचम अध्याय

उपसंहार

राजेन्द्र यादव नई पीढी के उपन्यासकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। यादव जी की प्रत्येक औपन्यासिक कृतिपर बदलती परिस्थितिओं का प्रभाव है। 'सारा आकाश' मध्यवर्ग के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन का जीवंत दस्तावेज है। संयुक्त परिवार प्रथा, वर्तमान समाज व्यवस्था के प्रतिकूल है, इस बात का एहसास बचपन में ही उनके मन को हुआ था। इसी लिए उनके प्रथम उपन्यास 'प्रेत बोलते हैं', जो बाद में सारा आकाश' नाम से खूब प्रसिध्दि पा बैठा, में संयुक्त परिवार की त्रासद गाथा रुपायित हुआी है।

'सारा आकाश' के कथानक की रचना करते समय समर को केन्द्रबिन्दु मानकर कथानक को आगे बढाया है। जीवन की विविध अवस्थाओंका चित्रण, मानव जीवन की समस्याओंकी व्याख्या इन सभी को कुशलता से चुनकर कथानक क्रमबध्द और सुनियोजित घटनाओं के सहारे कथानक को बढाया है। मुख्य कथा और प्रासंगिक कथा को औचित्य और प्रभाव के साथ संगठित किया है। कथानक में मुन्नी के साथ उसके पति का अत्याचार करना, दहेज न लाने के कारण प्रभा के साथ घरके लोगों का बर्ताव, प्रभा के प्रति भाभी का षडयन्त्र, समर का प्रभा के साथ एक वर्ष तक न बोलना आदि बातों को लेकर इस उपन्यास को प्रभावशाली बना दिया है।

'सारा आकाश' उपन्यास के शीर्षक को राजेन्द्र यादव जी ने सार्थक किया है। 'सारा आकाश' उपन्यास का शीर्षक में जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला, केन्द्रीय भावनाओंको प्रकट करनेवाला और चमत्कार पूर्ण बना दिया है। समर की भावनाओंका दर्पण तारों भरा सारा आकाश है। इसी लिए यह शीर्षक उचित और सार्थक बना दिया है।

राजेन्द्र यादव जी ने 'सारा आकाश' उपन्यास में देश - काल - वातावरण के सभी प्रकारों से कथानक का प्रभाव बढा दिया है। उन्होंने सामाजिक

LIBRARY
...HAPUR.

वातावरण निर्माण करके दहेज प्रथा, विवाह, संयुक्त परिवार, रूढि-परम्परा, रीति, रिवाज, अन्धविश्वास आदि बातोंको महत्वपूर्ण बताकर वातावरण को सफल किया है। इसके साथ सांस्कृतिक वातावरण, राजनीतिक वातावरण तथा प्राकृतिक वातावरण को भी महत्व दिया है। इन सभी वातावरणोंसे उपन्यास सफल करके दिखाया है।

`सारा आकाश` उपन्यास में राजेन्द्र यादव जी ने उनके हर एक पात्र में पूर्ण जीवन्त है। उपन्यास के प्रत्येक पात्र की क्रियाएँ, उसका व्यवहार, उसके चरित्र पक्ष का गठन आदि नियोजित करके पूर्ण स्वाभाविक बना दिया है। इसमें नायक समर और नायिका प्रभा के चित्रण में जीवन्तता, स्वाभाविकता और यथार्थताका सफल चित्रण हुआ है। परिस्थितियोंसे हर पात्र प्रभावित होता दिखाई दिया है। उन्होंने हर एक पात्र में बौध्दिकता के साथ भावुकता दिखायी है। यह पात्र कल्पना की सृष्टि नहीं है बल्कि इनका चयन हमारे आपके बीच से किया गया है।

`सारा आकाश` उपन्यास में राजेन्द्र यादव जी ने कथोपकथन पूर्ण सार्थक और सारगर्भित है। कथानक को गति प्रदान करके अपना जीवन दर्शन बताकर तथा पात्रों की व्याख्या करनेवाले कथोपकथन है। शिरीष के प्रभावोत्पादक संवाद से उद्देश्य स्पष्ट किया है। उपयुक्तता, अनुकूलता, संक्षिप्तता, भावात्मकता, सम्बध्दता, स्वाभाविकता, उद्देश्यपूर्णता आदि कथोपकथन के गुणोंसे संवाद अत्यंत सफल हुए है। उनके हर एक पात्र के कथोपकथन से उनके विचारोंको सजीवता देनेमें सरलता पायी है।

भाषा शैली के द्वारा राजेन्द्र यादव जी ने `सारा आकाश` उपन्यास अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बना दिया है। राजेन्द्र यादव जी का भाषा पर अच्छा अधिकार होने से उनकी भाषा शैली सार्थक और सफल सिध्द बनी है। पात्रों के अनुरूप भाषा, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग, प्रसंगानुरूप भाषा शैली का प्रयोग किया है। भाभी की भाषा सबसे रोचक है। समर के भाषामें शिक्षा का प्रभाव है। शिरीष की भाषा प्रवाह पूर्ण है। राजेन्द्र यादव भाषा-प्रयोग के संबंध में बहुत सजग रहे है।

`सारा आकाश` उपन्यास में बताये गये परम्परागत विवाह, संयुक्त परिवार का बन्धन, आर्थिक परिस्थिति, दहेज, हिन्दू संस्कृति, शिक्षा, बेकारी, नेताओं का चित्रण इन सभी उद्देश्योंसे राजेन्द्र यादव जी ने यह सिद्ध करके दिखाया है कि अपने जन्म के समय यह जितना प्रासंगिक था, आज भी उतनाही प्रासंगिक है। उद्देश्य की दृष्टि से यह उपन्यास बहुत सफल है। यह उन्होंने स्पष्ट किया है कि संसार का विशाल रथ पति और पत्नी पर ही निर्भर होता है।

प्रस्तुत प्रबन्ध के आरंभ में कुछ प्रश्न उठ खडे हुए थे, उनके निष्कर्ष निम्नानुसार है ----

(१) `सारा आकाश` उपन्यास मे राजेन्द्र यादव ने मानव जीवन की समस्याओं--की व्याख्या करना, जीवन की विविध अवस्थाओं का चित्रण, जीवन - पक्षों के महत्व का मूल्यांकन और अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति इन विशेषाताओंको बताया है। मानव जीवन की व्याख्या करके `सारा आकाश` जीवन की कडवी वास्तविकता को बताया है। जीवन की विविध स्थितियोंका चित्रण करके `सारा आकाश` उपन्यास की कथा सफल बन गई है।

(२) `सारा आकाश` उपन्यास में शिरीष भाई को ही युवा पीढी का विचारक इस लिए कहा है कि, शिरीष समाज और परिवार की सम्पूर्ण विकृतियों और विषमताओं के कारणों की तह तक पहुँचने और उनका विश्लेषाण करने की क्षमता रखता है। शिरीष भाई नई दृष्टि से सोचने का प्रयत्न करके अपने नए विचारों से प्रभावित कर समर के दृढ विचारों और जड मान्यताओंको बहुत कुछ दूर करने में सफल हुए है। शिरीष भाई ने संयुक्त परिवार, बेकारी, नेता आदि समस्याओं को लेकर जो विचार प्रकट किये है, वे वस्तुस्थिति पर आधारित है। व सम्पूर्ण प्राचीनता का विध्वंस कर डालना चाहता है। शिरीष समर के विचारों को बदलने में अपनी प्रमुख भूमिका अदा करते है। शिरीष भाई देश की उस तीसरी पीढी का प्रतिनिधित्व करते है, जिसने आजादी से

पहले बडे-बडे सपने देख रखे थे कि आजादी मिल जाने पर देश की गरीब और पीडित जनताके सारे दु:ख दर्द दूर हो जायेंगे । परन्तु देखा कि आजादी देश के केवल सुविधा भोगी तथाकथित बडे लोगों के लिए ही हासिल की गई थी । शिरीष भाई नई पीढी के प्रतिनिधि हैं । शिरीष भाई एक जागरुक विचारक हैं । उनकी दृष्टि सम्पूर्ण समाज व्यवस्था को अपने भीतर समेट लेती हैं । शिरीष कहता है कि, हमारा समाज इतनी रुढ मान्यताओं और सडी-गली परम्पराओं में जकडा हुआ है कि इनका नाश किए बिना इस समाज का उध्दार नहीं हो सकता । अपनी परित्यक्ता बहन की दयनीय दशा उन्हें तलाक, पिता की सम्पति में पुत्री का समान अधिकार, संयुक्त परिवार की बुराईयों आदि संबंध में सोचने को बाध्य कर देती हैं । इसी लिए शिरीष भाई को युवा पीढी का विचारक कहा गया हैं ।

(३) `सारा आकाश` के सभी चरित्रों में समर ही आदर्श पात्र इस लिए हैं कि, समर यादव जी की आस्था का प्रतीक हैं और वह यादव जी को अमर बनायेगा । समर सामाजिक ,आर्थिक, पारिवारिक, मानसिक सभी मोर्चोंपर अकेला लडता और हारता रहा हैं । वह विकाम परिस्थितियोंको अनुकूल बनाने की हरदम कोशिश करता हैं । वह सौ में से निन्यान्वे भारतीय युवकोंका प्रतिनिधि हैं । राजेन्द्र यादव के उपन्यास में मध्यवर्ग के अनेक लोग अपनी तस्वीर देख सकते हैं । यादव जी ने समाज और व्यक्ति को अलग अलग नहीं रखा हैं । जिस तरह प्रेमचन्द के नाम के साथ होरी का नाम जुडा हुआ हैं और प्रसाद के साथ श्रध्दा का, उसी तरह राजेन्द्र यादव के साथ हम उनके नायक समर का नाम जोड सकते हैं । समर जैसे नवयुवक आज भी हैं, और उन्हे भी जीवन में वही सब कुछ भोगना पडता हैं, जो समर को भोगना पडा हैं ।

(४) राजेन्द्र यादव जी ने `सारा आकाश` उपन्यास में संयुक्त परिवार, परम्परागत विवाह, आर्थिक परिस्थिति, दहेज-प्रथा, अन्धविश्वास और शिक्षा, हिन्दू-संस्कृति, नेता और बेकारी इन उद्देश्यों को सामने रखा हैं । जब तक हमारे समाज का आर्थिक ढाँचा समूल रुपसे नहीं बदला जायेगा, तब

तक न जाने कितने समर और प्रभा इस चक्की में पीसते रहेंगे । इन उद्देश्यों को पढकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इस उपन्यास की रचना यद्यपि सन् १९५२ से पहले की गई थी, और कथानक उस समय की परिस्थितियों को लेकर बुना गया था, मगर इन उद्देश्योंसे आज की परिस्थिति नहीं बदल गयी । आज २१ वर्षों बाद भी यह उपन्यास जीवन्त दिखाई देता है । २१ वर्षों पहले इस वर्ग की जो आर्थिक स्थिति थी उसकी आज की स्थिति से तुलना करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भयानक महँगाई ने केवल संयुक्त परिवार व्यवस्था को समाप्त कर दिया है । दहेज-प्रथा, बेकारी, नेता, आर्थिक परिस्थिति ये सभी स्थितियाँ आज भी दिखाई देती हैं ।

राजेन्द्र यादव का उपन्यास साहित्य परिस्थिति की उपज है । स्वतन्त्रतापूर्व काल की भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों ने २८ अगस्त १९२९ को जन्मे राजेन्द्र यादव का अनुभूति पक्ष समृद्ध किया । इस काल की परिस्थितियों में राजेन्द्र यादव के व्यक्तित्व का विकास हुआ । `सारा आकाश` उपन्यास के समर और प्रभा की जिन्दगी रूढियों के प्रेतों से ग्रस्त संयुक्त परिवार के लाश के समान प्रतीत होती है । राजेन्द्र यादव से पहले, संयुक्त परिवार को जयशंकर प्रसाद ने `तितली` नामक उपन्यास में स्पर्श किया था । लेकिन संयुक्त परिवार प्रथा का भयावह, खौफनाक और यथार्थ चित्रण राजेन्द्र यादव ने प्रथम बार `सारा आकाश` उपन्यास में कर इस प्रथा को बेनकाब किया है ।

अनुसन्धान की नई दिशाएँ ---

राजेन्द्र यादव के `सारा आकाश` उपन्यास का मैंने समीक्षात्मक अध्ययन इस लघु-शोध-प्रबन्ध में किया है । मुझे लगता है कि `सारा आकाश` में सामाजिक चेतना पर कार्य हो सकता है । शायद कोई शोधार्थी इस कार्य को सम्पन्न करे ।

परिशिष्ट
तथा
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Editor : Premchand

परिशिष्ट क्रं. 2

142

People's monthly of progressive literature

Hans

Editor : Rajendra Yadav

[illegible] 14•6•90

[illegible] में लिखा [illegible] पत्र मिला । [illegible] देना ज़रूरी है । मुझे [illegible] मेरे लिए [illegible] की बात [illegible] मुझे [illegible] उपन्यास [illegible] है और [illegible] अधिक एम. [illegible] के लिए शोध प्रबंध [illegible] । [illegible] साथ ही [illegible] "सारा [illegible]" [illegible] । अब [illegible] । "सारा आकाश" की भूमिका में काफी कुछ इस [illegible] है । जैसे मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के श्री चन्द्रभान [illegible] पुस्तक लिखी है उसमें [illegible] पर भी एक अध्याय है ।

[illegible] "[illegible]" [illegible] एक अच्छा [illegible] द्वारा प्रकाशित [illegible] है । 3-4 शोध प्रबंध [illegible] जिन लोगों ने पी.एच.डी. के लिए मेरे ऊपर [illegible] उपन्यास [illegible] बड़े-बड़े चैप्टर लिखे हैं । इस [illegible] मुझे [illegible] आने पर लिखा सकूँगा । [illegible] मुझे [illegible] सुविधा [illegible] और [illegible] मुझे कुछ समय [illegible] ताकि मैं बता सकूँ कि किन दिनों मैं यहाँ रहूँगा । [illegible] कोई [illegible] है ।

[illegible] इस उपन्यास [illegible] प्रेरणा या उद्देश्य क्या था ? [illegible] में लिखा गया था; इसलिए [illegible] मेरे लिए याद करना [illegible] में क्या [illegible] था ? शायद [illegible] और [illegible] उपन्यास को [illegible] था या शायद [illegible] में व्यक्तित्व के [illegible] को [illegible] उद्देश्य [illegible] संयुक्त परिवार का ढाँचा [illegible] है जहाँ [illegible] है और न [illegible] । [illegible] के साथ [illegible] और [illegible] के चलने [illegible] आपको एक ऐसे गड्ढे में [illegible] है जिससे [illegible] बाँधे [illegible] सूत्रों को [illegible] में [illegible] अपना व्यक्तित्व [illegible] कुछ टूट-फूट [illegible] और [illegible] जैसी दुर्घटनाएँ भी घटित

--- 2 ---

[illegible] हैं। [illegible] उसका शिकार हमारा युवा वर्ग होता है।

मन्नू को मैंने तुम्हारी सूचना दे दी है और वह तुम्हें प्यार भेजती है। आजकल मैं "हंस" नाम की प्रेमचंद द्वारा संस्थापित पत्रिका का संपादन कर रहा हूँ। इसमें दो वर्ष पहले मैंने वह अंश अलग कहानी के रूप में प्रकाशित किया था जो कभी 'प्रेत बोलते हैं' में था और उसे मैंने छोड़ दिया था।

यह संपादन और दिल्ली की जिंदगी मुझे इतना व्यस्त रखती है कि हर पत्र का जल्दी जवाब दे सकना संभव नहीं होता। मुझे विश्वास है कि तुम इसे गलत नहीं समझोगी और अपने प्रति उपेक्षा नहीं मानोगी। इस संबंध में कोई भी सवाल पूछोगी तो मैं उत्तर देने की कोशिश करूंगा। [illegible] 'आपका बंटी' में तुम्हारी रुचि देखकर सचमुच मुझे प्रसन्नता हुई। अगर तुम्हारी मातृभाषा मराठी या गुजराती है तो यह उपन्यास दोनों भाषाओं में निकल चुके हैं।

तुम्हारे अध्ययन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ। [illegible] के [illegible] लिखोगी तो [illegible] देने में आसानी होगी।

सस्नेह

[signature]

(राजेन्द्र यादव)

कु॰ नसरीन युसुफ शेख;
घ॰ नं॰ 1388, [illegible] के सामने,
[illegible], जिला: सांगली
पो॰ [illegible]लामपुर (महाराष्ट्र)

परिशिष्ट क्रं. 2

103 हौज़ख़ास फ़्लैट्स
नई दिल्ली 110016
25.9.90

प्रिय नासिरा,

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर अच्छा लगा। पाठकों की ऐसी प्रतिक्रिया ही लेखक का सबसे बड़ा मेहनताना होती है। जो लिखा उसने किसी की संवेदना को जगा दिया, किसी के हृदय को छू दिया --- लगा हमारा लिखना सार्थक हुआ। सज़ा काटती हमारी यहाँ की कानूनी व्यवस्था पर एक प्रश्न लगा है। अदालतों में बरसों चलने वाले मुकदमे किसी की पूरी ज़िन्दगी को ही बरबाद कर देते हैं। नौ साल बाद आपने बरी कर दिया लेकिन नौ साल तक

उसके जो जीवन के जो साल [illegible]
[illegible] कौन [illegible] है ?

पत्र के लिये बहुत-बहुत

सस्नेह:
मन्नू भंडारी

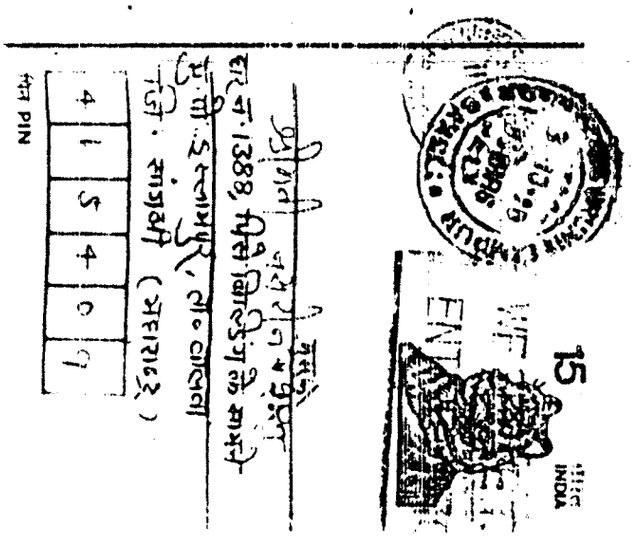

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	प्रकाशन एवं संस्करण
१	अमिताभ डॉ. वेदप्रकाश	राजेन्द्र यादव: कथा यात्रा	गिरनार प्रकाशन, मेहसाना (उ. गुजरात) प्रथम संस्करण, १९८२।
२	मिश्र डॉ. भगीरथ	काव्यशास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
३	रांग्रा रणवीर	हिन्दी उपन्यासों में चरित्र-चित्रण का विकास	भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९६१
४	शर्मा राजनाथ	राजेन्द्र यादव और आकाश	नेशनल पब्लिशिंग हाउस न्यी दिल्ली, प्र. सं. १९७९
५	शर्मा राजनाथ	साहित्यिक निबन्ध	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, सत्रहवा संस्करण, १९७८
६	सिन्हा डा. सुरेश	हिन्दी उपन्यास: उद्भव और विकास	अशोक प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६५

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	प्रकाशन एवं संस्करण
७	सोनवणे डा.चंद्रभानु	कथाकार राजेन्द्र यादव	पंचशील प्रकाशन, जयपुर,प्रथम संस्करण,१९८२ ।
८	त्रिपाठी शशीकिला	राजेन्द्र यादव:संवेदना और शिल्प	पी.एच.डी.उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय,१९८६ ।
९	टंडन डॉ.प्रतापनारायण	हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास	हिन्दी साहित्य भंडार लखनऊ .प्र.सं.१९६४
१०	टंडन डॉ.प्रतापनारायण	हिन्दी उपन्यास कला	हिन्दी समिति,लखनऊ, प्र.सं.१९६९ ।
११	त्रिगुणायत गोविंद	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त	एस.चन्द एन्ड कम्पनी(प्रा.) लि.नई दिल्ली.प्र.सं. १९६८ ।
१२	यादव राजेन्द्र	सारा आकाश	अक्षर प्रकाशन,नई दिल्ली, बारहवाँ संस्करण,१९७६ ।
१३	वही	अठारह उपन्यास	-- वही - प्र.सं.१९८१ ।
१४	वही	शह और मात	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पहला संस्करण,१९८४
१५	वही	कहानी:स्वरूप और संवेदना	अक्षर प्रकाशन,नई दिल्ली, तीसरा संस्करण,१९८८

पत्र - पत्रिकाएँ

` सारिका ` मासिक , जनवरी, १९९०, नई दिल्ली ।